आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:06-08-14

ज्ञान सागर बाप ने आज हम बच्चों को बार-बार नशा चढ़ाते हुए कहा, अब तुम सतयुग में देवी-देवता बनने वाले हो, बाबा तुम्हें सारे विश्व का मालिक बनाते है. तो इस पुरानी दुनिया से ममत्व निकाल कर, बाबा के साथ विश्व सेवा में लग जाना हैं. विश्व सेवा के लायक बनने के लिए इस ईश्वरीय पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना हैं. इस पढ़ाई को अच्छी तरह पढ़कर, दूसरों को भी पढ़ाना है तभी स्वर्ग में उंच पद प्राप्त कर सकेंगे.

बाबा ने सारी मुरली में जितनी बार हमें ईश्वरीय पढ़ाई के लिए अलग-अलग तरीक़े से प्रोत्साहित किया उसे ही फिरसे रिपिट करेंगे जिसे हमारी आत्मा में बाबा की याद और ईश्वरीय पढ़ाई छप जायें.

- रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, पढ़ाते हैं तो बच्चों को कितना फखुर होना चाहिए. पढ़ती तो आत्मा है ना. आत्मा संस्कार ले जाती है, शरीर तो राख हो जाता है. आत्मा जानती है इस मृत्युलोक से अमरलोक में अथवा नर्क से स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ते हैं.

- बाप आते हैं तुम बच्चों को फिर से विश्व का मालिक बनाने. तुम कितना बड़ा इम्तहान पास कर रहे हो. बड़े ते बड़ा बाप पढ़ा रहे हैं. जिस समय बाबा बैठ पढ़ाते हैं तो नशा चढ़ता है. बाबा बहुत जोर शोर से नशा चढ़ाते हैं. बाप आते ही हैं अमरलोक के लिए लायक बनाने.

- तुम बच्चे विश्व के बादशाही की बहुत बड़ी लौटरी लेते हो. परन्तु तुम हो गुप्त. तो ऐसी ऊंच पढ़ाई पर अच्छी रीति ध्यान देना चाहिए. सिर्फ याद की यात्रा से काम नहीं चलेगा, पढ़ाई भी जरूरी है. पढ़ाई है 84 का चक्र, यह भी बुद्धि में फिरना चाहिए.

- तुम समझते हो बाबा बड़े जोर से नशा चढ़ाते है. तुम्हारा जितना बड़ा आदमी कोई बन न सकें, तुम मनुष्य से देवता बन जाते हो. विश्व का मालिक तुम्हारे सिवाय और कोई बना है क्या?

- बाप आये है तुमको विश्व का मालिक बनाने, जायेंगी तो सब आत्माये मुक्तिधाम में. लेकिन वहॉ जाकर सबको सिर्फ बैठ जाना है क्या? वह तो कोई काम के न रहे. काम के तो तुम हो जो फिर आकर स्वर्ग में राज्य करते हो. तुम यहॉ आये ही हो स्वर्ग कि बादशाही लेने. तुम्हारे पास बादशाही थी, फिर माया ने छिन ली. अब फिर माया रावण पर जित पानी है, विश्व का मालिक तुमको ही बनना है.

- बाप कहते है देह सहित जो कुछ देखते हो उन सबको भूल जाओ. इसमें ही अटक पड़े तो ऊंच पद पा नहीं सकोगे. बाबा तुम्हें पुरुषार्थ तो करायेंगे ना. तुम यहॉ आये हो नर से नारायण बनने.

विश्व की सर्व आत्माओं का भाग्यविधाता, स्वयं परमात्मा अभी हम सब भाग्यशाली आत्माओं को नये कल्प में अपना भाग्य कैसे श्रेष्ठ बनाये उसका रास्ता बता रहे हैं. हम सब यह भी जानते है कि अभी बहुत थोड़ा समय रह गया है. तो इस बचे हुए समय को हमें बाबा की याद और ईश्वरीय सेवा में सफल करना ही हैं.

ॐ शांति. Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .